चरखी दादरी की चित्रकला एक विश्लेषण

सरिता

रिसर्च स्कॉलर
इतिहास विभाग
ओम स्टर्लिंग ग्लोबल यूनिवर्सिटी
हिसार (हरियाणा) - 125001

प्रस्तावना: - चरखी दादरी एक प्रसिद्ध इतिहास और संस्कृति से भरपूर शहर है जो हरियाणा राज्य में स्थित है। चरखी दादरी की चित्रकला एक समृद्ध ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से जुड़ी हुई है जो स्थानीय संस्कृति और विरासत का विस्तार करती है। चरखी दादरी के स्थानीय लोगों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। चरखी दादरी की चित्रकला का इतिहास काफी पुराना है। चरखी दादरी की चित्रकला के बारे में कहा जाता है की यह भारतीय चित्रकला का एक अद्वितीय शैली है जो दुनिया भर में अपने पहचान बनायीं हुई है। चरखी दादरी में चित्रकला के कई रूप उभर कर सामने आए। पहले शिलाओ और गुफाओं पर चित्रांकन हुआ, फिर पाण्डु लिपियों, भोजपत्रों, लकड़ी की जिल्द, कागज़ के पृष्ठों आदि पर चित्र बनने लगे। प्रशंसकों, अभिभावकों, उत्सावर्धकों आदि के प्रोत्साहन के कारण चित्रों के रंगों के साथ साथ स्वर्ण भी लगाया जाने लगा। यहाँ पर अनेक चित्र शैलीया विकसित हुई । जिन में चित्रित चित्रों को विश्व के चित्रकला के इतिहास में उच्च स्थान मिला हुआ है। कुछ चित्र तो ऐसे होते हैं कि यदि समुचित रूप तथा विभिन्न दृष्टिकोणों से समझने - समझाने हेतु उनका अध्ययन और व्याख्या की जाए तो कई हजार शब्द अभी कम पड़ते दिखाई देते हैं। सत्रहवीं शताब्दी में बादशाह औरंगजेब की धर्मअंधनता के कारण भारतवर्ष के केंद्रीय दिल्ली दरबार से चित्रकला लगभग निष्कासित सी हो गई थी। उनसे पहले बादशाह जैसे अकबर जहाँगिर तथा शाहजहाँ के शासन काल में दूर दूर से निपुण चित्रकार अपने परिवार सहित दिल्ली मे आकर बस गए थे। औरंगजेब के सीमित दृष्टिकोण के कारण हताश होकर दिल्ली छोड़कर संरक्षण की तलाश में देश के विभिन्न भागों में चले गए। 18वी शताब्दी में यह क्षेत्र दादरी तथा बाद में नए राज्य विकसित हुए जिनमे थे झज्जर, जींद, पटियाला, नाभा आदि सतलुज के इस पार और उस पार आपके कला पारखियों ने चित्रकार को आकर्षित किया। 18वीं सदी में दादरी में चित्रकला चरमोत्कर्ष पर पहुँच चुकी थी। किशनगढ़ की हवेलियों के भीतर चित्र विषय तथा शैली की विविधता के कारण अजूबा सा लगता है। यह राजस्थानी कला का नमूना है।

मुख्य शब्द: चित्रकला, भीतीचित्र, चित्रण, मेघ-मल्हार, दिव्य-घोषणा

दादरी में चित्रण:

दादरी में स्थानीय व्यक्तियों की आस्था व रूचियों के अनुसार अनेक प्रकार के चित्र बनाए गए। यहाँ के चित्रों में आसपास के वातावरण, मनोरंजन, मानसिक दशा एवं अन्य परिस्थितियों को एक प्रारूप या आकार में संजोकर व्यक्त किया गया। इन चित्रों में देवी देवताओं, महापुरुषों, विद्वानों, पशु -पक्षियों, योद्धाओं, बेल बूटों,फूलों, प्रसिद्ध व्यक्तियों आदि के चित्र बनाए गए। इन चित्रों में कहीं कहीं दक्षता का बोलबाला तो कहीं अभाव प्रतीत होता है लेकिन फिर भी यह अपने भाव को प्रकट करने में सक्षम रही है। इनकी गुणवत्ता व विषय प्रभावशाली रही है। आज देखरेख के अभाव में ठीक से प्रयोग न करने पर बहुत से चित्र हवेली से नष्ट हो रही है या धुएं की परत जम चुकी है। इसके कारण वह चित्र रंगों का चटखपन खो चुकें हैं लेकिन भीतरी दीवारों पर मौजूद चित्र धूप व बारीस से बचे होने के कारण अपने मूल अवस्था को आज भी संजोए हुए है।

मौजूदा भित्तिचित्र:

श्री गुरु हरसुख राय जी की सर्व-साँझी दिव्यसभा:

प्राचीन पांडुलिपियों में वर्णित घटनाओं के अतिरिक्त चित्रकारों ने यथार्थ जीवन से संबंधित भी चित्रण किया है। इस प्रकार के सुविकसित राजस्थानी शैली में चित्रित कुछ श्रेष्ठ चित्र भी उपलब्ध है। इस चित्र में श्री हरसुख राय जी की सर्व-साँझी दिव्य सभा का प्रस्तुतीकरण हुआ है इसमें श्रद्धालुओं सहित उन्हें प्रवचन देते हुए दिखाया गया है। उनके एक और यथोचित आसन पर आसीन उनके दोनों पुत्र और दूसरी ओर दो संगीतज्ञ अपना गायन और वादन प्रस्तुत कर रहे हैं। श्री गुरु हरसुख राय जी विधतापूर्ण काव्यकृति के दक्षतापूर्ण गायन को प्रोत्साहन देते थे। दक्ष संगीतकारों पर उनकी विशेष कृपा रहती थी। उनके सामने आशीर्वाद मार्गदर्शन लेने आये हुए कुछ आगुन्तक अभिवादन करते हुए दिखाए गए हैं। ऊपरी भाग में एक दोहा है जो इस प्रकार है।

"ब्रह्मा तत्व बोधक महारत्न स्वामी नर सिंह दयाल विशाल।
राय ऋषि गुरु हरसुख राय महिमानवित सहित है दोनों लाल।।"

संस्कृति संरक्षण अभियान की लघु झलक:

इस चित्र में गुरु महाबाहु राव लालसिंह जी के संस्कृति संरक्षण अभियान की लघु झलक दिखती है। इसमें उनको हल्का नीलापन लिए हुए सफेद घोड़े पर बैठा दिखाया गया है। उनके एक हाथ में त्रिशूल है और दूसरे हाथ में घोड़े की लगाम पकड़ी हुई है। ध्वजा और चिनह पर ओम तथा स्वास्तिक अंकित है। उनकी आगे बाईं और गायक और वादक लययुक्त वाणी प्रस्तुत कर रहे है और एकतारे और नादस्वरम से वातावरण को गुंजायमान करते हुए दिखाया है। उनके पीछे शस्त्रधारी घुड़सवार चल रहे हैं। उनके ऊपर के हाशिए में लिखा हुआ है।

"शास्त्र-शस्त्र धारी लोकाधिपति जन गण मन नायक श्री ।

धर्म संस्कृति हित बढ़े-चढ़े गुरु महाबाहु राव लालसिंह जी ।।"

महारास:
प्रेम और भक्ति पर महान ग्रंथ श्री भागवत पुराण में वर्णित महारास को दिखाया गया है। इसमें गोपियों सहित श्री कृष्ण जी प्रसन्न होकर उनके संग महारस कर रहे हैं। प्रत्येक गोपी को यह लग रहा है की श्रीकृष्ण जी उनके साथ नृत्य कर रहे हैं। जितनी गोपियां थीं उतने ही कृष्ण जी के रूप में प्रकट हो गये थे। महारास जीवात्मा और परमात्मा के मिलने का प्रतीक है।

मेघ मल्हार:
इस चित्र में कृष्ण तथा गोपियों के माध्यम से राग मेघ मल्हार के मानवीयकरण की प्रस्तुति की है। इसमें श्रीराधाकृष्ण को हिंडोले में झूलते तथा सखियों को चंवर डुलाते हुए दिखाया गया है। हिंडोले के ऊपर मोरनियों संग नृत्य करता हुआ मोर, पीछे नदी और आकाश में घनघोर घटाओं वाले मेघ है और जिनमे कहीं-कहीं बिजली चमक रही है।

दिव्य-घोषणा चित्र:
इस चित्र में देवी बख्तावरी रानी के समक्ष भविष्यवाणी करता हुआ एक दिव्य बालक दिखाया गया है। जिसके एक हाथ में ज्योति सहित दीपक है। इसमें रावपुरा की एक हवेली का भीतरी दृश्य है जिसमें उस समय के साज-सज्जा व भित्ति-चित्रण के साथ -साथ भवन निर्माण कला की भी झलक मिलती है। यह राजस्थानी शैली एक उत्तम चित्र है।

रानी पद्मावती व हिरामन तोते का चित्रण:
यह चित्र कवि मलिक मोहम्मद जायसी द्वारा लिखित महाकाव्य पद्मावत को याद कराता है। जिस पर फारसी में लिखा था

"तूती-ए-शिरी मकाल,
अज अन पद्मावत खुर्शीद जमाल।।"

इसका अर्थ है की मधुर कंठी तोता सौंदर्य की अपार प्रतिमा रानी पद्मावती का संदेश दे रहा है। यह साहित्य-चित्रण-कला का एक अद्भुत नमूना था। लेकिन अज्ञानतावश कला को नष्ट करने वालों ने रानी के हाथ, मुख और वस्त्रों को अपनी अर्थहीन रेखाओं द्वारा अस्पष्ट कर दिया था।

श्री गुरु आजानूबाहु राव का चित्र:
यह एक उच्चकोटि का चित्र था जिसमें श्री गुरु आजानूबाहु राव धनसिंह जी को लौह-आवरण-युक्त वीर-वेश में एक घोड़े पर पर्वत के ऊपर दिखाया गया है। लगभग सात फुट ऊंचे सुविकसित भीमकाय शरीर वाले जिनकी बलिष्ठ भुजाएँ उनके घुटनों की निचले भाग तक लंबी थी। उन्होंने अपने दाहिने हाथ में तलवार और बाएं हाथ में घोड़े की लगाम पकड़ी हुई है। साथ में दाईं और शस्त्र बंदूक कमरबंध में कटार बंधी हुई है और पीछे त्रिशूल है। तलवार के हथे के पास आगे की और झपटता हुआ सोने का सिंह बना हुआ है। उनके सभी शस्त्रों पर बारीक सुन्दर कारीगरी सहित रत्न जड़े हुए है। इस चित्र में सांकेतिक रूप से नदी जलाशय ध्वज युक्त दुर्ग और मंदिर दिखाए गए हैं। चित्र के ऊपरी भाग में सुरुचिपूर्ण ढंग से अंकित उनका संक्षिप्त संकेत परिचय देता हुआ दोहा इस प्रकार है।
"वीर शिरोमणि महा अश्वसेना स्वामी देग व तेग धनी।
राष्ट्र हितैषी त्यागमूर्ति गुरु आजानूबाहु राव धनसिंह जी।।"

मोहल्ला रावपुरा की हवेली:
श्री गुरु महाबाहु राव लालसिंह जी की रानी फुला देवी वाली हवेली में एक मेहराब के ऊपर स्वर्ग से फूल बरसाते हुए देवता बनाए गए हैं और एक एक मेहराब पर रिद्धी सिद्धि सहित गणेश जी बनाये गए हैं। एक दरवाजे के ऊपर बोध-ज्ञान रूपी ज्योति को नमन करता हुआ हाथी और दीवार के बीच में गोपियों सहित श्री कृष्ण राधा को हिंडोले में झूलते हुए दर्शाया हुआ है।

निष्कर्ष:
उत्तम चित्र दर्शकों को शताब्दियों तक आनंद प्रदान करते हैं। ये अनेक दृष्टिकोणों से उपयोगी सिद्ध होते हैं। पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रसिद्ध कहावत है की एक उत्तम चित्र 1000 शब्दों के बराबर होता है। किंतु कुछ चित्र तो इससे भी अधिक शब्दों को अपने अंदर समाए हुए हैं। यह चित्र कला-प्रेमी, पारखी, आलोचक, विद्यार्थी, शोधार्थी और अन्यजनों के लिए भी उपयोगी जानकारी इन चित्रों से प्राप्त करते हैं। इन चित्रों से ऐतिहासिक घटनाओं, सांस्कृतिक गतिविधियों, साहित्यिक दृष्टान्तों आदि की झलक देखने को मिलती है। चाहे अब तेज गति से बदलते समय मैं तकनीकी विकास के कारण अनेक माध्यम अस्तित्व में आ गये है फिर भी पूर्वकालीन कृतित्वों का महत्त्व कम नहीं हुआ है। पूर्वकालीन कृतित्व अपने से संबंधित समय की गाथा कहते हैं । इसलिए उनका विधिवत संरक्षण करना अत्यंत आवश्यक है। यदि किसी की चित्रयुक्त दीवार या छत पर नमी या किसी कारणवश क्षतिग्रस्त हो जाए तो उन्हें बचा पाना किसी ढंग से संभव न हो सके तो इतना तो किया जा सकता है कि उनकी फोटो ली जाए। इस फोटो से जानकारी स्पष्ट रूप से सुरक्षित हो जाती है। इन चित्रों के बारे में आवश्यक जानकारी स्पष्ट रूप से सुरक्षित कर सकते हैं जिससे कला-प्रेमियों, पारखियों, साहित्यकारों, विद्यार्थियों, शोधार्थियों इत्यादि के लिए उपयोगी सिद्ध हो सके।

ग्रंथ संदर्भ:
1. राव वीपीएस: "इक्वेस्ट्रियन मिनिएचरज"; द ट्रिब्यून नवंबर 20, 2011.
2. राव, विजय प्रकाश सिंह : "हरियाणा में चित्रकला के इतिहास का अध्ययन"; हरियाणा संवाद; जून, 2005; पृष्ठ 3 - 7,19 - 21 और आवरण। पृष्ठ 1 और केंद्रीय फैलाव.

3. राव, विजय प्रकाश सिंह : "सांस्कृतिक साहित्यिक परीपेक्ष्य में दादरी;" हरिगंधा, अंक 198; फरवरी 2011; पृष्ठ 23 - 27.
4. राव, वी.पी. एस : "वाइल्ड लाइफ इन मुगल आर्ट" द ट्रिब्यून; मई 29,1977.
5. राव, डॉक्टर इंदिरा रानी : i. "संस्कृति के प्रतीक भीतीचित्र"; हरीगंधा; नवंबर, 1987- फरवरी 1988.
ii. "हरियाणा के भीतीचित्र"; हरिगंधा; नवंबर - दिसंबर, 1989
6. राव, वी.पी. एस : "वॉल पेंटिग्स ऐट दादरी"; द ट्रिब्यून; दिसंबर 10, 1978.